जुलाई 2017

॥ओ३म्॥

मूल्य 10 रुपये

गुरुकुल आश्रम आमसेना की मासिक पत्रिका

# कुलभूमि

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2017

## शहीद चन्द्रशेखर आजाद

मातृभूमि के प्रबल उपासक, राष्ट्र के सजग प्रहरी, खून के कतरो से धरती माँ की प्यास बुझाने वाले। मातृभूमि के लिए जन्मदातृ माता को भी नगण्य समझने वाले, राष्ट्रभक्त चन्द्रशेखर आजाद की १११ वीं जयन्ती पर गुरुकुल परिवार शत् शत् नमन करता है।

पेज 1

## 4 अगस्त जन्मदिन के शुभावसर पर

भारत की आध्यात्मिक योग व आयुर्वेद परम्परा के महान् विद्वान् महापुरुष आचार्य बालकृष्ण विश्व स्तर पर आयुर्वेद के पुनरुद्धार, प्रचार-प्रसार एवं उसको प्रामाणिकता से स्थापित करने में जुटे हैं। आचार्य जी वैदिक सनातन ऋषि परम्परा के प्रतिनिधि हैं, जिनमें महर्षि चरक, सुश्रुत एवं धन्वन्तरि आदि समस्त ऋषियों का ज्ञान समग्र रूप से समाहित है। आपके नेतृत्व में पतञ्जलि योगपीठ ने बिना किसी सरकारी सहयोग के आयुर्वेद चिकित्सा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वस्तरीय कीर्तिमान स्थापित किया है। आपके प्रयास से योग एवं आयुर्वेद पर अनेक पेटेन्ट्स प्राप्त हो चुके हैं। आपके मार्गदर्शन में आयुर्वेद के ५० से अधिक शोध-पत्र भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल्स एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए आपको **'वनौषधि पण्डित'** व **'सुज्ञानश्री'** आदि अनेक विशिष्ट सम्मानों द्वारा सम्मानित किया गया है। भारत की प्रसिद्ध पत्रिका **'इण्डिया टुडे'** (२५ नवम्बर २००९) तथा **'आउटबुक'** (जनवरी २०१०) ने आचार्य जी की भारत के श्रेष्ठ १० प्रगतिशील, प्रतिभाशाली एवं तेजतर्रार युवाओं में गणना की। आप योग व आयुर्वेद के क्षेत्र में सर्वाधिक बिकने वाली अनेक सुप्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक हैं। सदियों पुराने अप्रकाशित आयुर्वेद के अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों का आपने विद्वतापूर्ण सम्पादन किया है। एक करोड़ से अधिक संख्या में प्रसारित आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र की श्रेष्ठ पुस्तक **'औषध दर्शन'** भी आपकी ही अनुपम रचना है। इसके अतिरिक्त आपके विशिष्ट ग्रन्थ **'विश्व भैषज्य संहिता'** पर कार्य चल रहा है।

आचार्य बालकृष्ण

आचार्य जी ने अनेक टी.वी चैनलों व प्रवचनों के माध्यम से विश्व के करोड़ों लोगों में जड़-बूटियों के प्रयोग एवं आयुर्वेद के प्रति रुचि को पुनः जागृत किया। आप एक महान् दिव्यदर्शी, परम तपस्वी, कर्मठ, पुरुषार्थी एवं बहुआचामी व्यक्तित्व के धनी, विश्वमंगल हेतु अहर्निश सेवा में संलग्न रहने वाले सहज, सरल किन्तु प्रभावशील व्यक्ति हैं। विश्व का विशालतम खाद्य प्रसंस्करण संस्थान **'पतंञ्जलि फूड एवं हर्बल पार्क'** आपके ही संकल्प का परिणाम है। आप दिव्य फार्मेसी व पतञ्जलि आयुर्वेद लि. जैसे आयुर्वेद के क्षेत्र में विश्व की विशालतम अत्याधुनिक औषध निर्माणशाला के शिल्पी एवं प्रेरक हैं। ऑर्गेनिक (जैविक) कृषि, विषमुक्त धरती तथा प्रकृति व पर्यावरण की रक्षा के लिए पतञ्जलि बायो रिसर्च इंस्टीट्यूट (PBRI) जैसी संस्थाओं का निर्माण भी आपकी ही सोच का मूर्त रूप है। अपनी दूरदर्शिता के साथ दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) एवं पतञ्जलि योगपीठ (ट्रस्ट) के अन्तर्गत विश्वस्तरीय, विशालतम, सुव्यवस्थित एवं सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त हॉस्पिटल, योगभवन, प्रयोगशालाओं एवं अन्य युगान्तरकारी संरचनाओं के निर्माण का नेतृत्व किया है। आप योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के अनन्य सहयोगी तथा पतञ्जलि योगपीठ परिवार के सभी संस्थानों के मुख्य संरचनाकार हैं। आप पतञ्जलि विश्वविद्यालय, पतञ्जलि आयुर्वेद कॉलेज, आचार्यकुलम् शिक्षण-संस्थान तथा वैदिक गुरुकुलम् आदि अनेक शिक्षण संस्थानों के संस्थापक हैं। आप आयुर्वेद की परम्परा के गौरवशाली महापुरुष व कोटि-कोटि राष्ट्रभक्त भारतीयों के प्रेरणास्त्रोत आदर्श हैं।

!! ओ३म् !!

कुलभूमिरियं वितरेज्जगते, सुमतिं विदुषामिहवेदविदाम्।
ऋषिभिश्चरितं महता तपसा, शुभं धर्मधिया सकलोन्नतिकृत।।

# कुलभूमि

गुरुकुल आश्रम आमसेना का मासिक मुखपत्र

जुलाई 2017 वर्ष - 40, अंक - 07 वि.सं. - 2074
सृष्टि संवत् - 1, 96,08,53,118, दयानन्दाब्द - 193

**प्रतिष्ठाता**
श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

**संरक्षिका एवं प्रधाना**
माता परमेश्वरी देवी

**कुलपति**
श्री मिठाईलाल सिंह जी

**संरक्षक**
श्री डॉ.पूर्णसिंह जी डबास

**परामर्श दाता**
श्री आचार्य सोमदेव जी शास्त्री
श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी

**प्रधान सम्पाद**
श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

**सम्पादक**
श्री डॉ.कुञ्जदेव जी मनीषी

**सह सम्पादक**
कोमल कुमार आर्य
ब्र.मनुदेव वाग्मी

**आदरी सम्पादक**
श्री शरच्चन्द्र जी शास्त्री
सुश्री आचार्या पुष्पा ''वेदश्री''

**सहयोगी**
श्री जगदीश जी राय बंसल
श्री अवनी भूषण पुरंग जी
श्री राजेन्द्र जी धनखड़
श्री घनश्याम जी अग्रवाल
श्री जगदीश जी पसरीचा
श्री रोहित नरुला जी

**व्यवस्थापक**
ब्र. राकेश शास्त्री
ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री

## महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

दक्षिण-पूर्व भारत को आर्यों के तीर्थस्थान, वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्य जगत को उच्चकोटि के विद्वान् एवं सेवक तैयार करने वाले महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना को अब स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस ५० वर्षिय अर्द्ध शताब्दी पर गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में २३, २४, २५ दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा। गुरुकुल का यह समारोह सारे आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद एवं नया उत्साह देने वाला हो। इस पवित्र भावना को लेकर महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गई है।

आशा है श्रद्धालु जनों का पूर्ण उत्साह पूर्वक सहयोग एवं आशीर्वाद इस कार्यक्रम को सफल करने को मिलेगा।

लेखों में दिये गये विचारों के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

-: प्रकाशक एवं मुद्रक :-

**गुरुकुल आश्रम आमसेना**

व्हाया - खरियार रोड, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766109
Web - *WWW.Vedicgurukulamsena.com*, मो.नं. 9437070541/615,
Email-*aumgurukul@rediffmail.com* *7873111213*
**खाते का नाम :** आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना SBI खरियार रोड
**खाता संख्या :** *11276777048* IFSC Code : SBIN*0007078*
गुरुकुल को दिया गया दान में **80G** के अन्तर्गत आयकर मुक्त है ।

वेदोपदेशः

# जनेऊ से जीवन की सफलता

आचार्य कोमल कुमार

**यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि।। ऋग्वेद.१०/५७/२**

**शब्दार्थ :- या** – जो, **यज्ञस्य** – संस्कार रुपी यज्ञ का, **प्रसाधन** – साधक, **तन्तु** – ब्रह्मसूत्र है, **देवेषु** – दिव्य पुरुषों में, **आततः** – फैला हुआ है।, **तम** – उसको, **आहुतम्** – जानते हुए, **नशीमहि** – प्राप्त करें।

**भावार्थ :-** हे मनुष्यों! जो यज्ञ प्रसाधन तन्तु विद्वानों में प्रसारित है। उस ब्रह्मसूत्र (यज्ञो पवित) को धारण कर जीवन में सफलता को प्राप्त करें। व्याख्या माता के गर्भाशय में पलते हुए भ्रुण का सम्बन्ध आँवनाल नाभि से होती है। इसी के द्वारा माता के गर्भ में विभिन्न रासायनिक तत्वों का परस्पर विनियोग होता है और भ्रूण के श्वसन, पोषण और उत्सर्जन क्रियायें सम्पन्न होता हुआ गर्भस्थ पुत्र अमृता नाड़ी के माध्यम से पुष्ट होता है ठीक इसी तरह विद्या, बुद्धि, ज्ञान, विज्ञान व शरीर से पुष्ट करने के लिए ८,१६,१८ वर्ष की आयु में बालक- बालिका का उपनयन (जनेऊ) संस्कार आवश्यक है।

संस्कारों के क्रम में १० वाँ उपनयन संस्कार है यहाँ से बालक की शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, यह एक ऐसी परम्परा है जिससे बालक का चतुर्दिक विकास होता था, तथा यह भी सुनिश्चित हो जाता था, कि वह किस वर्ण के योग्य है। तद्नुरुप आचार्य उपनयन संस्कार करके द्विजत्व संज्ञा प्रदान करता हुआ, गुणानुसार शिक्षा प्रदान करता था। गुरु के ज्ञान से बालक अपने संकल्प, साहस व साधना से उत्तरोत्तर ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि करता हुआ, अपने जीवन को धन्य कर पाता था। श्रेष्ठ और संस्कार युक्त आचरण की शिक्षा व्रतमंत्र का उच्चारण करते हुए वह मन ही मन संकल्प लेता है मेरा जीवन किसी भी दशा में पवित्रता से तिरोहित न हो, नियमित दिनचर्या उचित आहर-विहार तथा निरन्तर योगाभ्यास द्वारा तेजस्वी, वर्चस्वी बनने का प्रयत्न करता है। युग निर्माता महर्षि दयानन्द जी संस्कार विधि में लिखते है कि संस्कार एक ऐसा महान विज्ञान है जिससे संतान अत्यन्त योग्य होता है उसका शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होने योग्य हो सके। वह बल दीर्घायु, विद्या और सत्यता आदि गुणों से युक्त होकर सच्चा इंसान बनता है।

सामान्य जनो की सदैव यह कामना रहती थी कि जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए यज्ञ रुपी (श्रेष्ठतम कर्म) करके देवों को रिझाने प्रचलित प्रमुख साधन है। उन्हें भी जनेऊ धारण करने का विधान है। यज्ञ करने का अधिकारी तभी हो सकता है जब वह उपनीत हो यज्ञोपवित धारण किया हुआ हो। ऋग्वेद में सुन्दर मंत्र आता है **''स सूर्यस्य रश्मिभिः परिव्यत तन्तु तन्वास्त्रिवृत यथाविदे। नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिरजनीनाम् उपायाति निष्कृतम।।''**

**अर्थात् :-** मनुष्य ज्ञान प्राप्ति के लिए तीन डोरे वाला यज्ञोपवित को धारण कर सूर्य की रश्मि से जगमगाता है। और विद्या का स्वामी बनकर दक्षता को प्राप्त होता है। वेदाध्ययन का सुचक होने से यज्ञोपवित को ब्रह्मसूत्र, व्रतसूत्र भी कहा जाता है।

यज्ञोपवित के तीन धागों में कई रहस्य छुपे हुए है- १. यज्ञोपवित के तीन धागे मन, वचन, कर्म में पूर्ण एकता का प्रतीक है। जिससे विश्वसनीय व्यक्तित्व की पहचान बन सके। २. मातृऋण, देवऋण, ऋषिऋण से उऋण होने का संदेश है। ३. शरीर, वाणी, मन पर संयम का संदेश है। ४. सत्य, यशश्री की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ की प्रेरणा है। ५. उत्तम, मध्यम, अधम पाश से मुक्ति का मार्ग है। यज्ञो पवित में पांच गाठे, पंच महायज्ञ को सदैव करने की प्रेरणा देता है। विद्वानों ने यज्ञोपवित की लम्बाई धारण करने वाले के अंगुल से ९६ का परिमाण माना है इसका अर्थ यह है कि जनेऊ धारण करने वाले को ३२ विद्यायें और ६४ कलाओं के ज्ञान के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जो वाणी का विषय है वह विद्या और जो हाथ का विषय है वह कला (हूनर) है। प्रयास यह हो कि जितनी अधिक विद्या और कला सीख सके उतना अच्छा है। इसी से द्विज की महत्ता बनती और बढ़ती है।

अच्छी सुसंस्कारी संतान की चाह रखने वाले माता-पिता सबसे पहले उत्तम खान, पान, आहार, विहार करते हुए सोलह संस्कारों को करे करावें। जिससे संस्कारी पुत्र पैदा होकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके। आज प्राणी जगत् के प्रत्येक पशुओं के नस्ल सुधार की आवश्यकता हो रही है। वृक्ष वनस्पत्तियों को भी कलम करके नस्ल सुधार के लिए सरकार करोड़ों रु. खर्च कर रही है। किन्तु मनुष्य के नस्ल सुधार पर किसी का ध्यान नहीं है केवल साक्षर बनाना उद्देश्य रह गया है। इसलिए उद्देश्य के ठीक विपरीत राक्षस तैयार हो रहे है।मानव में मानवता हो इसलिए संस्कारों का प्रचलन पुनः स्थापित किया जाये। प्रत्येक श्रेष्ठ माता-पिता भारतीय संस्कृति के दो प्रतिक यज्ञोपवित और शिखा (चोटी) अवश्य ७ अगस्त (श्रावणी उपाकर्म) में संस्कार करावें। जिससे प्रवृत्ति बन सके और उत्तम कार्यों से लगाव बढ़े।

# सम्पादकीय ...

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

इस समय श्रावण महीने की बौछार सारे देश को तृप्त कर रही है। संसार के कई अन्य देशों में भी अति वृष्टि से बाढ़ का प्रकोप हो रहा है। इस वर्षा से जन –धन की हानि हो रही है। परन्तु तपती भूमि माता की प्यास बुझ गई, देश के कई स्थानों पर अनेक पशु–पक्षी प्यास से तड़प रहे थे। उन सबको वर्षा ने तृप्त कर दिया चारों ओर हरियाली छा गई पृथ्वी के सभी प्राणियों को नया जीवन मिल गया इस वर्षा के भरे हुए सरोवर तालाब सालभर प्राणी जगत को तृप्त करते रहेंगे।

यह इस देश का सौभाग्य है। कि ऋतुए प्राणियों को विशेषकर मनुष्यों को सर्दी–गर्मी एवं वर्षा का आनन्द देती है। इस प्रकार छः ऋतुओं वाले देश संसार में बहुत कम है। इस लिए भारत को हमारे पूर्वजो ने देवभूमि कहा है। पुराणों में तो यहाँ तक लिखा है। कि इस आर्यावर्त देश में जन्म लेने के लिए देवता भी इच्छा करते है।

परन्तु आजकल के जगत् की भौतिक चकाचौध भोगवाद की संस्कृति ने देवताओं के इस देश को असुरो का देश बना दिया। अतः यदि कोई धर्मपरायण व्यक्ति ऋषियों के आदेश अनुसार सात्विक जीवन बिताता है। तथा भोगवादी राक्षसी संस्कृति से दूर रहना चाहता है। उस व्यक्ति को मूर्ख गवार एवं असभ्य मानते है। परन्तु ऐसे व्यक्ति यह नहीं सोचते की विदेशी संस्कृति मानने वाले उनके पूर्वज कितने सभ्य थे संसार के देशो में जब तक हमारी पूर्वज ऋषिमुनि नहीं गये तब तक उनका जीवन पशु तुल्य था। ऐसे लोग अपने देश से तुलना करके हमारे देश को ही असभ्य मानते है। चालाक अंग्रेजो ने हमारे देश के सारे इतिहास बिगाड़ दिया। उन्होंने कल्पित इतिहास बना दिया। कि यहाँ के पूर्वज पेड़ों में या गुफा में रहते थे। केवल पत्तों से अपने गुप्त अंगो को ढकते थे। जब की है इससे उल्टा। आर्यों के पुराने संविधान ग्रंथ मनुस्मृति में लिखा है।

**एतत् देश प्रसूतस्य सकाशदग्रजन्मनः।**
**स्वँ चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।**

**अर्थात् :–** इस देश के चरित्रवान धार्मिक विद्वानों के उपदेश एवं आचारण से संसार के सभी मनुष्य ने ज्ञान एवं प्रेरणा प्राप्त की।

श्रावणी वेद स्वाध्याय का पर्व है। अच्छे ग्रंथो के स्वाध्याय से ही मनुष्यों को परोपकारी पवित्र जीवन बनाने की प्रेरणा मिलती है। योगाभ्यास का मार्ग दर्शन करने वाले योगदर्शन में महर्षि पंतजलि कहते है। **'तपः स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः'**

**अर्थात् :-** तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान योगाभ्यास के मुख्य साधन है।

अतः श्रावणी के पावन पर्व पर सब आर्यों को स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

इस वर्ष १५ अगस्त एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी एक ही दिन है। यह विचित्र संयोग है।

योगेश्वर श्री कृष्ण जी आर्य जाति के प्रेरणा स्त्रोत है। यद्यपि पराधीनता के समय भोगवादि हिन्दुओं ने उस महापुरुष को बहुत बदनाम कर दिया।

परन्तु महाभारत में श्री कृष्ण का जीवन बहुत श्रेष्ठ लिखा है। अतः योगीराज श्री कृष्ण के पवित्र जीवन से हमें शिक्षा लेनी चाहिए।

**स्वतंत्रता की महत्ताः-** विदेशी संस्कृति में पला अंग्रेजी शिक्षा में शिक्षित व्यक्ति इस देश की स्वतंत्रता की महत्ता को नहीं जानता । उसे तो आज की व्यवस्था में दोष ही दोष दिखते है। देश की स्वाधीनता की महत्ता को वही व्यक्ति समझ सकेगा । जिसने इस देश की पराधीनता के समय अंग्रेजों में आतंक को देखा था यहाँ तक अंग्रेज हमको हेय दृष्टि से देखते थे। कि कोई भी भारतवासी पक्की सड़क पर भ्रमण करना या चलना अंग्रेजो का ही अधिकार था लाहौर की एक घटना है एक दिन प्रातः काल साईंस कॉलेज के प्रोफेसर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी अपने एक साथी के साथ भ्रमण करते हुए पक्की सड़क पर चल रहे थे। उनके पीछे एक अंग्रेज घोड़ा गाड़ी (टांगा) में आया जब उसने देखा हिन्दुस्तानी पक्की सड़क पर चल रहा है उसने टॉगे से उतरकर पं. गुरुदत्त जी को ताबुकसे पीटना शुरु किया। तब गुरुदत्त जी ने भी अपना सामान अपने साथ चले साथी को देकर जूता निकालकर उस अंग्रेज की खुब पिटाई की पिटाई खाकर वह अंग्रेज चुप-चाप घोड़ा गाड़ी में बैठकर उस अंग्रेज ने गुरुदत्त जी से पूछा तुम कौन हो? इस पर गुरुदत्त ने उत्तर दिया साईस कॉलेज का प्रोफेसर गुरुदत्त यह सुनकर वह अंग्रेज चुप-चाप चला गया इस घटना से ज्ञात होता है। कि स्वाधीनता के समय अंग्रेज हमको कितना दबाते थे।

अतः सभी विचारशील देशवासियों को देश की स्वतंत्रता कि महत्ता को समझना चाहिए।

¤¤¤

## मित्र उवाच

जो व्यक्ति स्वयं अपने समस्त व्यक्तिगत क्रार्य को बिना दूसरे के सहायता से अपने आप ही अच्छी तरह पूरा करते हैं। तथा समय पढ़ने पर नयी परिस्थियों में ढलकर स्वंय सुखी रहते हैं। तथा दूसरों को भी शक्ति अनुसार सहायता देते हैं।

**चौ. मित्रसेन जी आर्य**

# स्त्री की सबसे प्यारी वस्तु

एक बार एक मुसलमान बादशाह ने एक धन सम्पन्न हिन्दुनगर को लूटने के लिये तथा वहां के निवासियों को अपने मत में लाने के लिये घेर लिया। वह अति प्रसन्न था, कि धर्म फैलाने का पुण्य मिलेगा साथ में धन भी परन्तु उसके मन में विचार आया, कि जब मैं धर्म कार्य करने जा रहा हूँ तो कुछ ऐसा ढंग करुं, जिससे अधिक खून खराबा न हो, पर्याप्त सोचता रहा, परन्तु किसी निश्चय पर न पहुँचा पर अंत में एक उपाय सूझ ही गया। उसने सोचा– मैं हिन्दू पुरुषों से जरुर नाराज हूँ। धर्म प्रचार का विरोध ये पुरुष ही करते हैं। सम्पत्ति भी इन्हीं के हाथों में है अत: पुरुषों का धर्म परिवर्तन करके या दण्ड देकर वश में कर लेने से स्त्रियाँ अपने आप वश में हो जाती है। पुरुष का धर्म ही स्त्रियों का धर्म होता है, अत: स्त्रियों को बचाया जाये उन पर दया की जाये और पुरुषों को दण्ड दिया जाये।

बादशाह ने एक आदेश जारी किया कि प्रात: काल सब हिन्दू स्त्रियाँ अपनी सबसे बहुमूल्य वस्तु गठरी में बांधकर शहर से निकल जाये। जो कुछ ले जाना हो, रात को अच्छी तरह सोच कर लेना चाहिये। क्या वस्तु साथ में लेनी है एक गठरी को छोड़कर साथ में कुछ नहीं लेना है परन्तु पुरुष एक भी नहीं निकलना चाहिये।

बादशाह के इस आदेश से शहर में हलचल मच गई। सारी रात बेचैनी रही कोई उसकी दया की प्रशंसा कर रहे थे। तो कोई वस्तु इकट्ठा करने में लगे थे। सब ओर व्यग्रतापूर्वक सामान बांधा जा रहा था और प्रात: काल की प्रतीक्षा हो रही थी, स्त्रियाँ पुरुषों के जीवन की प्रार्थना कर रही थी।

जब प्रातः काल सूर्य की सुनहरी रश्मियाँ क्षितिज पर पड़ी तो शहर के बाहर स्त्रियों की भारी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी, सभी के चेहरों पर चिन्ता की रेखायें कुछ की गठरियाँ छोटी थी तो कुछ की गठरियाँ भारी थी। भार के कारण किसी-किसी के पांव कांप रहे थे तो कोई-कोई उठा नहीं पा रही थी।

''अहह! ये स्त्रियाँ अपनी-अपनी बहुमूल्य वस्तु लेकर जा रही हैं, हाँ ठीक तो है। मैंने ही तो इन्हें ऐसा करने के लिये कहा है- बादशाह ने कहा। पर फिर उसके मन में शंका उठी-

परन्तु ये गठरियां इतनी बड़ी क्यों है? भारी भी बहुत दीख रही है। ये इन्हें उठा नहीं पा रही हैं, ये उन्हें उठा नहीं पा रही है, ऐसा न हो सारी ही कीमती चीजें ये निकाल लावें इनमें देखना चाहिये। हुजूर! इनमें देखना चाहिये क्या छिपा है, एक मंत्री ने कहा- बादशाह खुद ही छिपी वस्तुओं को देखना चाहते थे। शायद यहीं पर पर्याप्त कीमती सामान मिल जाये, अतः बादशाह ने कहा- इन गठरियों को जमीन पर रखवालों। बिना जंचवाये कोई न ले जा सके, ऐसे तो सारा धन ही शहर से बाहर निकल जायेगा।

भयभीत हिरणियों की तरह स्त्रियों ने एक-एक करके सभी गट्ठर जमीन पर रख दिये। तथा बादशाह की तरफ देखने लगी, बादशाह ने सिपाहियों को कहा एक-एक करके सभी गठरियों को खोलकर देखो ये स्त्रियाँ किस-किस वस्तु को कीमती मानकर ले रही हैं।

कहने की देर था मुसलमान सिपाही झटपट गठरियों को खोलने लग गये कि शायद हमें भी कोई वस्तु हाथ लग जाये परन्तु यह क्या कोई भी बहुमूल्य वस्तु उन्हें हाथ नहीं आई जिसे उन स्त्रियों से छिपाया जा सके फिर उन गठरियों में क्या बंधा था जब कुछ आदमी उन गठरियों में से निकाले तो बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्रोध से उसका चेहरा तमतमाने लगा, क्या यही तुम्हारे आभूषण हैं? बादशाह ने कड़क कर स्त्रियों से पूछा-

रक्षा की भावना से स्त्रियां अपने पतियों को गठरियों में बांधकर ले आई थी, अब गठरियाँ खुलने पर भय से कॉप गई। किसी से कोई जवाब देते न बना। बादशाह का क्रोध बढ़ता जा रहा था, उसने कड़क कर फिर कहा- इन्हें छिपाकर क्यों भाग रहीं थी, क्या यही तुम्हारे आभूषण हैं?

## ऋषि उवाच

जिसने कोई शास्त्र न पढ़ा न सुना और अतीव घमण्डी, दरिद्र होकर बड़े-बड़े मनोरथ करनेहारा विना कर्मों से पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा करने वाला हो, उसी को बुद्धिमान् लोग मूढ़ कहते हैं। जो विना बुलाये सभा वा किसी के घर में प्रविष्ट हो उच्च आसन पर बैठना चाहे, विना पुछे सभा में बहुत सा बके, विश्वास के अयोग्य वस्तु वा मनुष्य में विश्वास करे वही मूढ और सब मनुष्यों में नीच मनुष्य कहाता है। जहां ऐसे पुरुष अध्यापक, उपदेशक, गुरु और माननीय होते हैं वहां अविद्या, अधर्म, असभ्यता, कलह, विरोध और फूट बढ़ के दु:ख ही बढ़ता जाता है।

**वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती**

## शास्त्र चर्चा

**द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्नस्मिल्लोके विरोचते।**
**अब्रुवन् पुरुषं किञ्चिदातोऽनर्चयस्तथा।।**

**भावार्थ :-** किसी को कटुवचन न कहने वाला एवं दुष्टों को सम्मानित न करने वाला इस विश्व में यश और सम्मान दोनों प्राप्त करता है।

**तत्र पूर्व चतुर्वर्गो दम्भार्थमपि सेव्यते।**
**उत्तरश्च चतुर्वर्गो नामहामसुं तिष्ठति।।**

**भावार्थ :-** यज्ञ दान अध्ययन एवं तप से चार गुण सत्पुरुषों से नित्य जुड़े रहते है किन्तु दम, सत्य, दया और सरलता श्रेष्ठ पुरुष प्रयत्न एवं परिश्रम से अर्जित करते है।

**एतान गुणांस्तात महानुभावनेको गुणः संश्रयते प्रसह्य।**
**राजा यदा सत्कुरुते मनुष्यं सर्वान्गुणानेप गुणो विभाति।।**

**भावार्थ :-** प्रज्ञा कुलीनता, इन्द्रिय-नियंत्रण ज्ञान पराक्रम मितभाषिता दानवृत्ति और कृतज्ञता, इन गुणों में जब सत्कार का गुण भी संयुक्त हो तो सभी गुण चमक जाते है और मनुष्य श्रेष्ठ कहलाता है।

**अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेद्, यो नाहतः प्रतिहन्यान्न घातुयेत्।**
**हन्तुं च यो नेच्छति पापकं वै तस्मै देवाः स्पृहयन्त्यागताय।।**

**भावार्थ :-** श्रेष्ठ मनुष्य परनिंदा, आत्मप्रशंसा, अत्युक्ति (बड़बोलेपन) बदले के भाव ईर्ष्या आदि अवगुणों से दूर ही रहते है। वे तो शत्रु एवं पापी दुष्टों के प्रति भी भावुक होकर उनके कल्याण की ही कामना करते है। ऐसे मनुष्यों से देवता भी स्पर्धा करते है।

**कु. निशा आर्या**

# बुद्धिमान बनो

-ठाकुर विक्रम सिंह

**'यो बुध्यते बोधयति वा स बुधः'** जो स्वयं बोध स्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम बुध है। परमेश्वर ने मानव को जो सबसे विशेष चीज दी है जिसके कारण योनियों में मनुष्य सर्वोपरि है। वह है बुद्धि। अन्य जीवों में भी बुद्धि का कुछ न कुछ अंश विद्यमान है। हाथी एक बुद्धिमान जीव है। पुलिस के कुत्ते बुद्धि के कारण विशेष दक्षता रखते हैं। बैय्या अपना सुन्दर घोंसला बनाकर अपनी सूक्ष्म बुद्धि को प्रदर्शित करती है। मधुमक्खी का छत्ता विशेष रचना का सूचक है। कहां तक गिनायें अनेक प्राणी भी बुद्धिरूपी धन रखते हैं। किन्तु मानव में उनमें यह अन्तर है कि मानव अपनी बुद्धि के बल से संसार को भी जानता है, अपने आप को भी जान लेता है और परमात्मा को भी जान लेता है और परमात्मा को भी जानता है, अन्य जीवों में यह सामर्थ्य नहीं। आज के मानव का आहार-व्यवहार यह बताता है कि उसके कार्य आज उससे भी नीचे गिरता जा रहा है। आज वह ऐसी गहरी खाई में गिर गया है जिससे उसका निकलना कठिन हो रहा है। आज के मानव जीवन पर आप थोड़ा दृष्टिपात करेंगे तो देखेंगे कि वह पशुओं से भी गया-गुजरा है क्योंकि उस दयालु ईश्वर ने अपने इस मानव पुत्र को आदेश दिया था कि तुम्हें अपने भोजन में सुन्दर पदार्थों का उपयोग करना है, मैं तुम्हारे लिए सेब जैसा सुन्दर पौष्टिक फल, संतरे व आम जैसी रसीला अंगूर जैसा मधुर प्रिय फल दे रहा हूँ। जब गर्मी अधिक पड़े, ऐ मानव तब तू परेशान होने लगे तो तेरे लिए रसभरे शहतूत होंगे, खुष्की दूर करने के लिए ककड़ी-खारी होगा। यदि इससे भी काम न चले तो बादाम जैसी सूखी मेवा, मुनक्के डालकर ठंडाई पीना जो तेरी तृषा को शान्त करेगी, साथ-साथ बुद्धि में भी वृद्धि करेगी। जब मेरे प्यारे पुत्र तू वर्षा ऋतु में प्रविष्ट होगा तो तुझे आम रसभरा फल मिलेगा-मक्का के भुटटों का उपयोग करना, जामुन जैसा शीतल बुद्धि, वीर्यवर्धक फल खाना। शरद ऋतु आयेगी तो पौष्टिक अमरूद खाना, चीकू तेरे लिए ही है। सुन्दर पौष्टिक अन्न तिल, जौ, उड़द, चावल, चना सब दालें तेरे लिए ही हैं। किन्तु अफसोस है, दुःख है, आज का मानव अपने सब कार्य बुद्धि के विरुद्ध कर रहा है। कहां सुन्दर अन्न व फल, कहां तेरी नीच पिशाच, राक्षसी गिरी हुई भावना। सुन्दर पशुओं को, पक्षियों को मार-मारकर खाने लगा। पेट को कब्रिस्तान ही बना डाला, और तो और अंडे भी निगलने लगा। अंडे तक न रहा, उससे निकलने वाले चूजों (बच्चों) को तल-तलकर पकौड़े बना-बनाकर खाने लगा। वाह रे राक्षस! फिर भी अपनी बुद्धि पर नाज कर रहा है। वाह पीने के लिए अमृतमय दूध दिया तो पीने लगा अंगूर जैसे अनेकों फलों को सड़ाकर शराब, जिससे बुद्धि भ्रष्ट होती है।

# महिला जगत् ...

कु. कान्ता आर्या

इस बार माता मैत्रेयी जी दो मास के पीछे रतनपुर ग्राम के महिलाओं को उपदेश देने के लिए आ सकी तो माता जी के न आने से ग्राम की महिलाएं तो परेशान थी ही श्रद्धालु कन्याएं तो बहुत दु:खी थी कन्याओं की क्या बात ग्राम के पुरुष भी माता जी के न आने से बहुत अभाव सा अनुभव कर रहे थे। अत: माता जी के आते ही सारे गांव में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सभी ओर उत्साह भर गया। कोई-कोई कन्या तो इतनी भावुक हो गई कि माता जी को देखकर उसको अभिवादन करते हुए उनकी आखों में खुशी के आसु आ गई।

अस्तु कुमारी सुशीला ने तो तुरन्त उठ करके माता जी का अभिवादन किया फिर माता जी को नास्ता कराकर उपदेश स्थान पर ले आया।

सभी के बैठने पर कुमारी देविका ने खड़े होकर माता जी से पूछा कि माता जी आज के युवक बहुत चरित्रहीन हो गए है इसका क्या कारण है।

**माता मौत्रेयी:**- माँ पर पूत पिता पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा, मैं शास्त्र की बाते पीछे बतलाऊगी पहले एक लोककथा सुनाती हूँ, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा प्रभाव पड़ता ही है। अर्थात् संतान माता के अनुकूल होती है आज कल माताओं के संस्कार बिगड़ गए है महिलाएं चरित्रहीन होती जा रही है आज की महिला के पेट से किस पुरुष के वीर्य से बच्चा पैदा हो रहा है इस बात का ज्ञान उसे खुद नहीं होता, जबकि पहले कि माताएं बहुत पवित्र चरित्रवान होती थी माता जैसा विचार करती वैसे ही संतान बनती थी, महारानी मदालसा का उदाहरण प्रसिद्ध है। वह देवी सात्विक प्रकृति की विदुषी महिला थी। योगाभ्यास एवं साधना में उसकी रुची थी। अत: उसने अपने छ: पुत्रों को ईश्वर भक्ति की प्रेरणा देकर योगी बना दिया। जो भी पुत्र युवक होता वह योगाभ्यास के लिए जंगल पहाड़ का रास्ता अपना लेता।

इससे परेशान होकर महाराजा माता मदालसा से कहा देवी यदि सभी पुत्र योगी बन जाएगे, तो इस राज्य को कौन चलाएगा। राजा के आग्रह पर रानी ने राजश्री संस्कार बना लिए। अत: सातवा पुत्र बहुत तेजस्वी वीर बना इससे ज्ञात होता है कि पहले कि माताएं जैसे चाहती थी वैसा संतान पैदा कर लेती थी।

अत: आज की मेरी माता बहनों को इस ओर विशेषकर ध्यान देनी चाहिए कि वे अपनी विचारों को पवित्र बना कर रखे तथा जब संतान माता जी के गर्भ में आ जाए उस समय अपने आहार-व्यवहार पर विशेष ध्यान रखे प्रतिदिन संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय करे कभी भी क्रोध या चिंता न करे राग, द्वेष से बचने का यत्न करे तो संतान अवश्य अच्छी बनेगी इस सम्बन्ध में मेरे पास कई उदाहरण है, फिर कभी इन घटनाओं को सुनाऊगी। आप लोग मेरे नहीं आने से दु:खी थी परन्तु मैं किसी आवश्यक कार्य पर चली गई वैसे अभयकारी धर्म की रक्षा का पवित्र कार्य था। आगे भी यदि कोई ऐसी समस्या आ जाए तो आप चिंता न करे वैसा मेरा आशीर्वाद आप सबके साथ है।

# योग के आठ अंग हैं

**'यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि'** (योग.द. २.२९) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। यम पांच हैं- **'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहा यमाः'** (योग.द. २.३०) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह।

**अहिंसा**- सब प्रकार से सब कालों में सब स्थानों में प्राणिमात्र को दुःख न देना अहिंसा है। किसी प्राणी के प्रति मारने की भावना रखना, ईर्ष्या करना और क्रोध करना आदि सभी व्यवहार हिंसा कोटि में आ जाते हैं। इन हिंसामूलक द्रोह, ईर्ष्या, क्रोध आदि को छोड़ देने वाले मनुष्य के प्रति सामने वाले द्रोही, क्रोधी मनुष्य भी अपना द्रोह और क्रोध छोड़ देते हैं। ''अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः'' (योग.द. २.३५) अहिंसा वृत्ति का पूरा अभ्यास हो जाने पर उस मनुष्य के समक्ष दूसरे प्राणी भी अपना वैरभाव त्याग देते हैं।

स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन में अनेक ऐसे अवसर आये जब स्वामी जी द्वारा पाखण्डों और मूर्तिपूजा आदि अन्धविश्वासों के खण्डन से क्रुद्ध हुए कुछ लोग उन्हें मारने तक के लिए उद्यत हुए, किन्तु स्वामी जी के दयाभाव और निर्वैरभाव के कारण वे लोग स्वामी जी के भक्त बन गये।

सोरों की घटना है- ''एक दिन स्वामी जी उपदेश कर रहे थे और बीसियों लोग दत्तचित्त होकर श्रवण कर रहे थे। उस समय वहां एक हट्टा-कट्टा पहलवान सा जाट आ गया। एक मोटा सोटा कन्धे पर रखे सभा को चीरता हुआ वह सीधा स्वामी जी की ओर बढ़ा। उसका चेहरा मारे क्रोध के तमतमा रहा था। आँखें रक्तवर्ण थी। भौंहें तन रही थी और माथे पर त्योरी चढ़ी हुई थी। होठों को चबाता और दातों को पीसमा हुआ वह बोला- ''अरे साधु! तू ठाकुर पूजा का खण्डन करता है, श्री गंगामैया की निन्दा करता है और देवता के विरुद्ध बोलता है। झटपट बता तेरे किस अंग पर सोटा मार कर तेरी समाप्ति कर दूँ'' ये वचन सुन कर एक बार तो सारी सभा विचलित हो गई, परन्तु स्वामी जी की गम्भीरता में रत्तीभर भी न्यूनता न आई। उन्होने शान्त भाव से मुस्कराते हुए कहा- ''भद्र! यदि तेरे विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई अपराध है, तो इस अपराध का प्रेरक मेरा मस्तिष्क ही है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है, अतः यदि तू अपराधी को दण्ड देना चाहता है, तो मेरे सिर पर सोटा मार इसी को दण्डित कर'' इन वाक्यों के साथ ही स्वामी जी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसकी आंखों में डालकर उसे देखा। जैसे बिजली कौंध कर रह जाती है,

धधकता हुआ अंगारा जलधारा-पाने से शांत हो जाता है, वैसे ही तत्काल वह बलिष्ट व्यक्ति ठण्डा हो गया। वह श्री चरणों में गिर पड़ा और अविरल अश्रुमोचन करता हुआ अपराध क्षमा करने की याचना करने लगा।'' (देवर्षि दयानन्द चरित पृष्ठ ९३-९४)

सिद्धान्त अथवा धर्म के विषय में भी अहिंसा का पालन आवश्यक है और लाभकारी भी । यदि आपके सिद्धान्तों की कोई हंसी उड़ावे अथवा आपको चिड़ावे, तो उस समय उस पर क्रोध करना अथवा प्रत्युत्तर में उसकी निन्दा आदि करना भी हिंसा की कोटि में आता है। उस समय शांत रहकर उसे सहन करना चाहिए। आपकी शान्ति के कारण कालान्तरों में वे आपके सिद्धान्तों के प्रशंसक भी बन सकते हैं। इस प्रसंग में एक घटना का विवरण द्रष्टव्य है-

''फर्रूखाबाद में पुत्तुलाल शुक्ल पहलवान और नारायाण दुबे आर्य समाजियों से बहुत चिढ़ते थे। जब स्वामी जी संवत १९३६ में फर्रूखाबाद में आये थे, तो उनके चले जाने के पश्चात् कुछ दिन तक पौराणिक उत्तेजित रहे। एक दिन उपर्युक्त शुक्ल और दुबे को चौबे तोताराम जो आर्य समाजी थे, मार्ग में मिल गये। और दोनों व्यक्तियों ने उन्हें चिढ़ाना आरम्भ किया। चौबे तोताराम ने ईंट का उत्तर पत्थर से दिया तो दोनों ने मिलकर उसे पिटा। और दोनों व्यक्तियों ने उन्हें चिढ़ाना आरम्भ किया। चौबे तोताराम ने उन दोनों पर स्काट साहब के इजलास में अभियोग चलाया, जिसका परिणाम हुआ कि शुक्ल जी पर २० रु. अर्थ दण्ड और दुबे जी को तीन मास का कारावास हुआ। और दोनों को दो-दो सौ रुपये के मुचलके और जमानत दो साल तक नेक चलन रहने की देनी पड़ी।

जब स्वामी जी इस बार आये तो स्काट साहब ने उनसे कहा कि आपके एक सेवक को पीटने पर दो लोगों को पर्याप्त दण्ड मिल गया है। महाराज ने स्काट साहब के बात पर प्रसन्नता प्रकट नहीं की, जिसकी उन्हें आशा थी और उनसे कहा कि सन्यासी तो अपने घातक को पीड़ा पहुंचते देख कर प्रसन्न नहीं होते। और आर्य समाजियों से असन्तोष प्रकट करते हुए कहा कि यदि तुम लोग इस प्रकार मुकद्दमा बाजी करोगे तो धर्म और देश का क्या सुधार कर सकोगे। जिन्हें सन्मार्ग पर लाना है, उन्हें कैद में पहुंचाना सुधार की शैली से बाहर है। घूंसे का बदला घूंसा नहीं। यदि पौराणिक भाई तुम पर कोई अत्याचार करें तो उचित सीमा तक उसे सहना चाहिए, जब उन्हें ज्ञान होगा, तो वे स्वयं पश्चात्ताप करेंगे और तुमसे प्रेम प्रकट करेंगे **( महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र २ पृष्ठ. २३९-२४० )**

**आओ अपने घर चलें से साभार**

# एक आर्य युवक की अरब देशों की रोमांचकारी यात्रा

क्रमागत.....

शाही महल में रुचिराम जी राज्य के मेहमान की हैसियत से ठहराये गये थे। दूसरे दिन दश बजे दरबार में हाजिर हुए। दरबार में शाही खानदान के सब बड़े लोग और अमीर-उमरा हाजिर थे। रुचिराम जी का सबने उठकर प्रणाम अभिवादन किया और उनका भाषण सुना। भाषण सुनकर इब्नसऊद बहुत खुश हुए। दरबार में मिश्र का रहने वाला एक डाक्टर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। रुचिराम जी ने मादक वस्तुओं की निन्दा करते हुए तम्बाकू का भी विरोध किया। इब्नसऊद ने स्वीकार किया कि उनके धर्म में भी तम्बाकु पीने की मनाही है। बस, उसने तम्बाकु पीना और बेचना बन्द किये जाने की आज्ञा निकाल दी और दूसरे दिन से वह सारे राज्य में बन्द भी हो गया है।

रयाज से मक्का और तीस दिन पैदल का मार्ग था। सारा रास्ता रेतिला था और कदम-कदम पर बद्दू डाकुओं का भय था। बद्दू लोग हज करने वालों को लूट लेना और मार डालना अपना धर्म समझते थे। मक्का से मदीना की ओर कोई बड़ा काफिला भी जाता था, तो बद्दू लोग प्रत्येक मनुष्य से दो पौंड टेक्स लेकर तब जाने देते थे। जो टेक्स देने में जरा भी हीला-हवाला करता था, वह तत्काल गोली का निशाना बना दिया जाता था। रुचिराम जी ने इस तरफ भी इब्न-सऊद का ध्यान दिलाया। इब्न-सऊद ने एक बड़ी सेना और कुछ मोटरें बद्दूओं के दलन के लिए तैनात कर दीं और कुछ दिनों में रास्ता निर्विघ्न हो गया।

रयाज में दो महीना शाही मेहमान रहकर और धर्म-प्रचार करके रुचिराम जी पैदल मक्का की ओर चल पड़े। सुलतान इब्न-साऊद ने फरमाया कि, पन्द्रह बीस दिन बाद वे भी मक्का जायेंगे, तब उन्हीं के साथ मोटर में चले चलना। लेकिन उन्होंने रास्ते के गांवों में धर्म-प्रचार करते हुए पैदल जाने की इच्छा प्रकट की ओर सुलतान से विदा मांग ली। ये शुकरा और मरात होते हुए बीस दिनों में दवादमी पहुंचे। वहां एक दिन सुलतान इब्न-सऊद मोटर पर मक्का जाते हुए मिले। उन्होंने उनको अपने साथ बैठा लिया। सुलतान के साथ सौ मोटरों में तो शाही घराने की स्त्रियाँ थी और दो सौ मोटरों में शाही घराने के पुरुष ओर गुलाम थे।

रास्ते के दोनों ओर सुलतान के दर्शनों के लिए गांववालों और बद्दुओं की भीड़ जमा थी। सुलतान हर एक को एक एक रयाल (सिक्का) देते थे। रुचिराम जी की दृष्टि में उस समय इब्न-सऊद से बढ़कर न्यायप्रिय शासक अरब में दूसरा नहीं था।

**क्रमशः**

# परिवार कैसे संगठित और सुखी रहे

रामचन्द्र महेन्द्र

वेदों के आधार पर ऋषियों ने मानव जीवन को चार आश्रमों में बांटा है। १. ब्रह्मचर्य, २. गृहस्थ, ३. वानप्रस्थ, ४. सन्यास, वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी मत मताान्तर में जीवन का यह वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं पाया जाता। यह वैदिक विचारधारा की महान् विशेषता है। यह जीवन मानो गणित का एक प्रश्न है जिसमें इन आश्रमों के माध्यम से जोड़ व घटा, गुणा और भाग, चारो का समन्वय पाया जाता है। यदि परिवार के सदस्य इस प्रश्न को समझ ले तो परिवार कैसे संगठित और सुखी रहे, यह विषय अच्छे समझ में आ सकता है। ऋग्वेद में एक मंत्र है

**इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम।**
**क्रीडन्तौ पुत्रैनप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।** ऋग्वेद.

वेद मंत्र पति और पत्नी को आशीष दे रहा है तुम दोनों यहीं रहों, तुम एक दूसरे से अलग न होवों, तुम दोनों सम्पूर्ण आयु नातियों के साथ खेलते हुए आनन्दपूर्ण रहो, ब्रह्मचर्य आश्रम में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों को इकट्ठा किया जाता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके इन संचित शक्तियों को गृहस्थ के विभिन्न कार्यों में खर्च करना पड़ता है वानप्रस्थ में संचित शक्तियों को (संयम) के द्वारा स्वाध्याय, जप, एवं तप द्वारा गुणीभूत करता है और संन्यासाश्रम में संग्रहित ज्ञान को परिव्राजको भूत्वा वितरित करता है यह वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का संक्षिप्त सार है।

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि दयानन्द ''स्त्री, पुरुष परस्पर प्रसन्न रहे'' इस विषय का वर्णन मनुस्मृति के ''सन्तुष्टों भार्ययाभर्त्ता भर्त्ता भार्यातथैव च'' आदि कई श्लोकों द्वारा करते हुए कहते है। जिस परिवार में पत्नी से पति और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहते है। उसी परिवार में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते है। जहाँ कलह होता है वहाँ दुर्भाग्य और दारिद्र्य स्थिर होता है।

गृहस्थाश्रम मनुष्य में त्याग की भावना लाता है। स्त्री के त्याग का तो कहना ही क्या वह तो त्याग की साक्षात् प्रति मूर्ति है पत्नी गृहस्थ में प्रवेश करते समय अपने माता-पिता, भाइयों और बहनों का त्याग करती है साथ ही उस वातावरण का भी त्याग करती है जिसमें उसका पालन पोषण हुआ हो। जिन भारतीय परिवारों में पाश्चात्य सभ्यता की हवाए जहा, तहाँ प्रवेश कर रही है वहाँ भी इकट्ठे मिल बैठकर अभी तक खा रहे है। यह त्याग की भावना परिवार को संगठित और सुखी

रखने का मूल मंत्र है।

वैदिक परिवार गृहस्थाश्रम के माध्यम से संबन्धों की स्थापना करता है। रिश्ते गृहस्थ के ही परिणाम है। ये रिश्ते व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार शक्ति प्रदान करते है। इनसे परिवार संगठित होता है, सुखी रहता है यज्ञोपवीत, मुण्डन, विवाह आदि संस्कार, किसी पर्व विशेष पर यज्ञादि के समय प्रसन्नता का वातावरण दर्शनीय होता है।

गृहस्थ की गाड़ी के पति और पत्नी दो पहिये है। जब दोनों पहिये सुचारु चलेंगे, तो गृहस्थ रुपी गाड़ी ठीक ढंग से चलेगी। दो शरीरों के मिलने का नाम गृहस्थ नहीं है, अपितु दो दिलो के मिलने का नाम गृहस्थ है। एक-दूसरे के भावना को समझना ही परिवार को संगठित रखने का अटूट साधन है। पति पत्नी और सास, बहू एक दूसरे का आदर सम्मान करे। धन कमाना गृहस्थी का एक महत्वपूर्ण आधार है अर्थोपार्जन के पवित्र साधन जुटाना, वैदिक धर्म में आश्रम मर्यादा के अनुसार केवल गृहस्थ ही धन कमाता है शेष तीन आश्रम नहीं। धन कमाने के साधन निर्दोष हो प्राय: सांसो में पुत्रवधुओं के प्रति प्रेम का अभाव होता है। वे अपनी बेटियों के प्रति जैसा स्नेह भाव दिखाती है वैसा ही वे अपनी पुत्रवधुओं के प्रति नहीं दिखाती।

पुत्र वधुओं में सास के लिए श्रद्धाभाव कैसे उत्पन्न होगा? बुद्धिमान सांस-श्वसुर वही है, जो अपनी बेटियों से भी अधिक पुत्र वधुओं को सम्मान व प्रेमभाव प्रदान करते है। टोका-टाकी से बचे। बुद्धिमान श्वसुर वही है, जो अपनी बेटियों से भी अधिक पुत्रवधुओं को सम्मान व प्रेमभाव प्रदान करते है।

माता-पिता और सास-श्वसुर के टोकने की आदत भी कलह का कारण है। छोटी-छोटी त्रुटियाँ करते है। इस टोका-टोकी से ही परिवार में झगड़े होते है। विवाहित बच्चों को कम से कम टोकें अपने पुत्र व अपने पुत्रवधु की कमियाँ दूसरों के सामने न कहे और सेवा की भावनाएं जागृत करें। नई पीढ़ी को चाहिए की माता पिता के अनुभव से लाभ प्राप्त करें। माता-पिता की सेवा अवश्य करें। मनुष्य दु:खी क्यों होता है? इसका एक कारण तो यह है की उसे जो कुछ भी जीवन में मिला है, उसकी नजर उस पर कम जाती है और जो नहीं मिला है उस पर उसकी दृष्टि बार-बार जाती है। संतुष्ट होना ही सबसे बड़ा सुख है। परिवार को संगठित रख सके और सुखी बना सके। इसके लिए परिवार में परम्परा डालें '**इद्न्नमम**' का भाव परिवार में हो। '**संगच्छध्वम्, संवदध्वम् संवोमनांन्सी जानताम**' वेदोपदेश से परिवार में सौहार्द बनायें रखें।

# अपवाहुक ( फ्रोजेन शोल्डर सिंड्राम )

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

यह रोग कन्धे का है जिसमें पीड़ित का कन्धा जाम सा हो जाता है, यह रोग प्रायः उनमें देखा गया है जो लोग ३/४ तकिया लगाकर सोते है, सूर्योदय के बाद जागते हैं, आलसी, भोगी, तामसिक, भोजन करने वाले, कन्धे पर भार गिरजाना, या कन्धे के आस-पास हड्डी में चोट आना इस प्रकार से रोग से रोगी ग्रसित होता है। सही मायने में कैप्सुल नाम से जानी जाने वाली कंधे के लाईनिंग सामान्य रुप से एक बहुत ही लचीली संरचला है। इसका लचीलापन व ढ़ीलापन ही, कंधे की हिलना-डुलना कार्य को सरलता से संपन्न कराता है।

इस में दर्द के समय में कंधे के जोड़ के चारों ओर स्थित कैप्सूल और लिंगामेंट में सूजन आ जाती है इससे यह संकुचित हो जाती है जिससे सामान्य लचीला पन खतम होता जाता है और दर्द जकडनपन बढ़ता जाता है। मधुमेह रोग में इसका होनेका अधिक डर रहता है। इस रोग में दिन के अपेक्षा रात को दर्द ज्यादा महसूश होता है।

इसमें रोग इतना बढ़ जाता हे कि हाथ हिलाना भी कठिन हो जाता है। भयंकर पीड़ा से रोगी कुछ भी करने में असफल हो जाता है। यह लगभग ४० से ५० वर्ष की उम्र वाले व्यक्तियों में अधिक होता है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति से M.RI.x R आदि करके शीघ्र रोग पत्ता लगा लेते हैं जिसमें चिकित्सा जल्दी किया जा सकता है। ध्यान रहे - आज कल डॉक्टर लोग कन्धे के जोड़ में स्टेरायड इञ्जेक्सन लगाकर इस रोग का क्षणित इलाज तो कर देते है पर उसका परिणाम बहुत ही खतरनाक होता है। इससे बचने के लिये आसन, व्यायाम, फिजोथैरायी आदि करें। हॉ इसका आयुर्वेद में सही ईलाज है पर धैर्य एवं विश्वास के साथ लम्बा समय तक सेवन करें तो अवश्य सुधार एवं लागभ मिलता है।

**चिकित्सा :-** सर्ववातहर कवच, बेदनाहर कवच, गृध्रसीहर कवच, महावात, गजाकुंश रस, बृहत वातचिन्तामणि रस, कटिसंधिवातहर चूर्ण, महाराानादि क्वाथ, बलारिष्ट, वातराज तैल, बृहत सिंह नाद गुगुल, इत्यादि अनेक आशुललप्रद औषधियाँ गुरुकुल आमसेना फार्मेसी में विशुद्ध सिद्ध जड़ी, बुटी से निर्माण करता है। हजारों रोगी लाभान्वित होते हैं। यदि आप पीड़ित है तो इस चलभाष से संपर्क करके अपवाहु जैसा रोग से मुक्ति पाइये।

**सम्पर्क सूत्र- 09437070541**

# श्रावणी उपाकर्म पर्व

सुश्री पुष्पा वेदश्री

पर्व अर्थात् त्योहार व्यक्ति समाज और राष्ट्र की जीवन्तता के प्रतीक होते है। पर्वों के माध्यम से मनुष्य एक रस जीवन से निकलकर नवरस और नवचेतना को प्राप्त करता है, घर परिवार समाज राष्ट्र में नवजीवन का संचार होता है।

वैदिक काल में वेदों के अतिरिक्त अन्यग्रंथ कम थे अत: उस काल में वेदों और वैदिक साहित्य के ही पठन-पाठन का विशेष प्रचार था। वर्षा ऋतु में वेद के पारायण का विशेष आयोजन होता था।

श्रावणी शस्य की जुताई-बुआई आषाढ़ से प्रारम्भ होकर श्रावण के अंत तक समाप्त हो जाती है, क्षत्रिय वर्ग भी इस समय दिग्विजय यात्रा से विरत हो जाता है। वैश्य भी व्यापार यात्रा वाणिज्य और कृषि से विश्राम पाते हैं। ऋषि, मुनि, सन्यासी और महात्मा जन भी अरण्य व वनस्थली को छोड़कर गाँव के पास रहते थे और वहीं वेदपठन, धर्मोपदेश और ज्ञानचर्चा में अपना चार मास बिताते थे। श्रद्धालु वेदाध्यायी उनके निकट रहकर ज्ञान श्रवण व वेदपाठ से अपना जीवन को सफल बनाते थे। ऋषियों के इस प्रिय कार्य से ऋषितर्पण मानते थे। अत: इस पर्व को ऋषितर्पण भी कहते हैं। जिस दिन से विशेष परायण प्रारम्भ किया जाता था उसे उपाकर्म कहते थे।

श्रावणी आर्यों का प्रासिद्ध पर्वों में से एक महान् पर्व हैं। इसका सीधा सम्बंध वेदों के अध्ययन-अध्यापन से हैं।

स्वाध्याय :- वेदादिशास्त्रों का स्वाध्याय इस पर्व से अवश्य प्रारम्भ किया जाये। स्वाध्याय जीवन का एक अंग है। स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता हैं। उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती हैं।

अत: इसे स्वाध्याय पर्व भी कहा जाता हैं। महर्षि मनु जी कहते है :-

**वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके।**
**नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममंत्रेषु चैव हि।।**

**अर्थात् :-** वेद के पठन-पाठन में और नित्यकर्म में आने वाले गायत्री जप या संध्योपासना में तथा यज्ञ करने में अनध्याय का विचार या आग्रह नहीं होता, अर्थात् इन्हें प्रत्येक स्थिति में करना चाहिए इनके साथ अनध्याय का विचार लागू नहीं होता।

**यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः।**

**तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु।।**

**अर्थात् :-** जो व्यक्ति जलवर्ष मेघस्वरुप स्वाध्याय को स्वच्छ-पवित्र होकर, एकाग्रचित होकर विधिपूर्वक करता है, उसके लिये यह स्वाध्याय सदा दूध, दही, घी और मधु को बरसाता है।

**महर्षि व्यास जी कहते है :-** 'स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते।।'

**यज्ञोपवित धारण :-** श्रावणी के साथ यज्ञोपवीत के धारण व पुराने को छोड़ने की प्रथा जुड़ी हुई हैं। विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान हैं। निविती, उपवीति प्राचीन वीति आदि नाम इसी आधार से है। इसी दिन तीन प्रकार यज्ञोपवीत तथा वेदारम्भ संस्कार भी नूतन छात्राओं का किया जाता हैं। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋण आदि कर्त्तव्यों से अपने को बंधा हुआ समझना चाहिए।

**ऋग्वेद में कहा है:-** 'यो यज्ञस्य प्रसाधन तन्तुदेवे वाततः तामाहतं नशीमही।।'

**अर्थात् :-** जो यज्ञोपवीत तन्तु यज्ञों का प्रसाधक है। और विद्वानों में प्रचलित है, उसका हम धारण करें।

**रक्षा बन्धन :-** वर्तमान समय में इसे रक्षाबन्धन पर्व के रुप में लोग मनाते है।

रक्षाबन्धन पर्व का परम्परा मुस्लिम काल से चला आ रहा हैं। बहने अपने भाई के कलाई में व वीरपुरुष को भाई के रुप में रक्षार्थ रक्षासूत्र बांधकर अपनी सुरक्षा का उत्तरदायित्व अर्पण करती थी। भाई भी अपने बहन की रक्षा के लिए प्राण तक न्यौछावर करने की प्रयत्न किया करते थे। इतिहास में इसका उदाहरण उपलब्ध होता हैं। हिन्दू नारी का अन्य विधर्मियों के पास राखी भेजना व स्वयं जाकर बांध देना व विपत्ति से रक्षा पाना स्पष्ट प्रतीत होता है।

जैसे :- चित्तौड़ की महारानी कर्मवती बादशाह बहादूर शाह के आक्रमण से बचने के लिये हुमांयू के पास राखी भेजी थी और हुमांयू ने भी तत्क्षण सैन्यबल के साथ जाकर युद्ध करके उसकी सहायता की थी। इससे यह सिद्ध होता है कि रक्षाबन्धन एक पवित्र पर्व है। भाई तथा बहन के स्नेह बन्धन को सूचित करता है।

अतः आइये इस श्रावणी व स्वाध्याय पर्व पर प्रतिदिन स्वाध्याय करने का संकल्प लें।

■ ■ ■

# स्वास्थ्य जगत् ....

## उर्फ तन्दुरुस्ती का बीमा

## वीर्य रक्षा करना हमारा प्रधान कर्त्तव्य है

भोजन के प्रसंग में हम साफ तौर पर लिख चुकें है, कि जो कुछ हम खाते-पीते हैं, उससे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र- ये सात धातुएं तैयार होती हैं। यही सातों धातु हमारे शरीर को धारण करती हैं, अर्थात् इन सातों से ही हमारी काया स्थिर है।

इन सातों धातुओं में शुक्र-वीर्य-प्रधान है। वीर्य-हमारी दिमागी ताकत है, वीर्य ही हमारी स्मरण-शक्ति है, वीर्य-बल से ही हमें वेशुमार बातें याद रहती हैं। वीर्य बल से ही हम बुद्धिमान, विद्वान् और बलवान कहलाने लायक होते हैं। वीर्य ही सब सुखों में प्रधान- आरोग्यता का मूल कारण है। वीर्य ही, हमारे शरीर-रुपी नगर का, राजा है। वहीं इस नौ दरवाजे के किले-शरीर में रोग-रुपी शत्रुओं से हमारी रक्षा करता है। खुलासा मतलब यह है कि जब तक हमारे शरीर रुप नगर का राजा-वीर्य पुष्ट और बलवान रहता है तब तक किसी रोग-रुपी दुश्मन को हमारी तरफ आँख उठा कर देखने की भी हिम्मत नहीं पड़ती। परन्तु वीर्य के निर्बल या क्षय हो जाने से हमें चारों ओर अंधेरा-ही अंधेरा नजर आता है। राजा-वीर्य-को कमजोर देखकर दुश्मनों-रोगों को चढ़ाई करने का मौका मिल जाता है। इस वास्ते वीर्य-रुपी राजा बिना, हमारे शरीर रुपी नगर की रक्षा होना असम्भव है।

वीर्य-रक्षा के ही प्रताप से अर्जुन, भीम धनुर्धारियों और गदाधारियों में श्रेष्ठ समझे जाते थे। विराट नगर में अकेले अर्जुन ने भीष्म, कर्ण और द्रोणाचार्य आदि समस्त कौरव वीरों को परास्त करके गौओं की रक्षा की थी, - वह सब वीर्य-रक्षा का ही प्रताप नहीं, तो और क्या था? महाभारत के युद्ध में बूढ़े भीष्म पितामह ने जो त्रिलोक-विजयी अर्जुन-भीम के छक्के छुड़ा दिये थे, वह सब वीर्य-रक्षा के प्रताप के सिवाय और क्या था? वीर्य रक्षा के ही बल से लक्ष्मण, रावण पुत्र-मेघनाद के मारने में समर्थ हुए थे।

प्राचीन-काल के लोग वीर्य-रक्षा को अपना प्रधान कर्त्तव्य समझते थे, लेकिन इस जमाने के लोग वीर्य-रक्षा को कुछ चीज नहीं समझते, बल्कि वीर्य-नाश करने को अपना परम पुरुषार्थ समझते हैं। पहले समय के लोग संतान पैदा करने के सिवा, इन्दियों की प्रसन्नता के लिये स्त्री-प्रसंग करना महा हानिकारक समझते थे। आज-कल के जवान, स्त्री को ही अपनी उपास्य देवी समझते हैं। सोते-जागते, खाते-पीते, हर समय उसी ध्यान में मग्न रहते हैं। उनको इससे होने वाली हानियों का पता नहीं है। "**चरक संहिता**" के चिकित्सा-स्थान के हमारे अध्याय में लिखा है-

**रस इक्षौ यथादघ्नि सर्पिस्तैलंतिले तथा।**
**सर्वथानुगतं देहे-शुक्र संस्वर्शने तथा।।**
**ततः स्त्री-पुरुषसंयोगे चेष्टा संकल्प पीडनात्।**
**शुक्रं प्रच्यवते स्थानाज्जलमाद्रति पटादिव।।**

**अर्थात् :-** '' जिस तरह ईख में रस, दही में घी और तिलों में तेल है, उसी तर समस्त शरीर और चमड़े में वीर्य है। जिस भांति गीले कपड़े से पानी गिरता है, उसी भांति स्त्री-पुरुष के संयोग, चेष्टा, संकल्प और पीड़न से वीर्य अपने स्थानों से गिरता है।'' जो वीर्य ईख में रस की तरह हमारे शरीर का है, जो वीर्य हमारी विद्या, बुद्धि और आरोग्यता-तन्दुरुस्ती- का मूल आधार है, उसे अति स्त्री-सेवन द्वारा नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है। दिन-रात स्त्रियों का ध्यान रखना सर्वत्र मूर्खता है, क्योंकि वीर्य का स्वभाव है कि वह स्त्रियों की इच्छा या ध्यान करने मात्र से ही अपने स्थान से अलग होने लगता है।

इस कलिकाल में, अति स्त्री-प्रसंग तक ही खैर नहीं है। आजकल के ना-समझ लोगों ने हस्तमैथुन, गुदा-मैथुन आदि और भी कितनी ही वीर्य-नाशक विधियां निकाली हैं। इन नई-नई खोटी विधियां के कारण भारतवर्ष का जो पतन हो रहा है, उसे लिखने में हमारी क्षुद्र लेखनी असमर्थ है। इन कुकर्मों के प्रताप से हजारों मूर्ख जवानी में ही नपुंसक और निकम्मे हो गये और अनेक घर संतान-हीन हो गये। सैकड़ों कुलवती स्त्रियाँ कुलटा और व्यभिचारिणी बन गयीं। अति मैथुन, अयोनि-मैथुन आदि की हानियाँ पूर्ण रुप से हम आगे लिखेंगे। यहाँ हम ''**चरक**'' से इन कामों से होने वाली हानियाँ संक्षेप में दिखलाते हैं।''**चरक-संहिता**'' के विमान-स्थान के पांचवें अध्याय में लिखा है-

**अकालयोनिगमनान्निग्रहादति् मैथुनात्।**
**शुक्रवाहीनि दुष्यन्ति शस्त्रक्षाराग्निभिस्तिथा।।**

**अर्थात् :-** ''कुसमय मैथुन करने, गुदा-मैथुन या पशु-मैथुन करने, इन्द्रियों के जीतने, अत्यन्त मैथुन करने और शस्त्र, क्षार तथा अग्निकर्म के दोष से शुक्रवाही स्त्रोत बिगड़ जाते हैं।'' ''**सुश्रुत**'' के चिकित्सा-स्थान के चौबीसवें अध्याय में लिखा है-

**प्रत्यूषष्यर्द्धरात्रे च वातपित्ते प्रकुप्यतः।**
**तिर्यग्योनावयोनौ च दृष्टयोनौ तथैव च।।**

**उपदंशस्तथा वायोः कोपः शुक्रस्य च क्षयः।**

**अर्थात् :-** ''सवेरे और आधी रात के समय मैथुन करने से वायु और पित्त कुपित हो जाते हैं। घोड़ी, गधी और कुतिया आदि के साथ मैथुन करने और दुष्ट योनि में मैथुन करने से गर्मी का रोग हो जाता है तथा वायु का कोप और शुक्र-वीर्य का क्षय होता है।''''**चरक**'' के निदान-स्थान के छठे अध्याय में लिखा है-

**आहारस्य परंधाम शुक्रंतद्क्ष्यमात्मनः। क्षयेह्यस्य बहून् रोगा-मरणंवा नियच्छति।।**

अर्थात् :- वीर्य ही खाये-पिये पदार्थों का अन्तिम परिणाम है। वीर्य के क्षय होने से अनेक रोग अथवा मृत्यु तक हो जाती है। इस वास्ते प्राणी को वीर्य की रक्षा करना परमावश्यक है।''

अति मैथुन और गुदा-मैथुन की हानियाँ जैसी ''**चरक**'' और ''**सुश्रुत**'' ने लिखी हैं, वह पूरी तरह सच हैं। इन कामों की बुराइयों को हम आखों देख रहे हैं। अतः इस विषय में संदेह करने की जरुरत नहीं। जबकि वीर्य-क्षय होने से हमारी मृत्यु तक हो जाना सम्भव है, तब, दीर्घजीवी होने के लिए हमें वीर्य-रक्षा अवश्य ही करनी चाहिये। निःसन्देह वीर्य-रक्षा करना हम लोगों का प्रधान कर्त्तव्य है।

## गुरुकुल आश्रम आमसेना में नया प्रवेश प्रारम्भ

अब स्कूलों, कॉलेजों में तीव्रगति से चरित्रहीनता बढ़ रही है। छोटे-छोटे बालक भी वासना के जाल में फंसते जा रहे हैं। अतः इन कुसंस्कारों से देश के भावी बालक-बालिकाओं के चरित्र की रक्षा गुरुकुलों की आर्ष शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

अतः जो सज्जन अपने होनहार पुत्र-पुत्रियों को चरित्रवान्, विद्वान्, बलवान, तेजस्वी बनाना चाहते हैं, जो वृद्धावस्था में अपना सहारा चाहते हैं तो गुरुकुल आश्रम आमसेना, आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना, आर्ष ज्योति गुरुकुल कोसरंगी (छ.ग.), परममित्र आर्ष गुरुकुल गेरवानी, रायगढ़ (छ.ग.) आदि में प्रवेश करा सकते हैं। गुरुकुल में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के आर्ष पाठ्यक्रम के साथ छ.ग. संस्कृत मण्डल तथा पुरी विश्वविद्यालय से भी परिक्षायें दिलायी जाती है। पढ़ाई के साथ औषध निर्माण, पैकिंग, कम्प्यूटर, कृषि, गौसेवा की भी क्रियात्मक शिक्षा स्वावलम्बी बनाने के लिये दी जाती है।

**विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें** - 9437070541/615, 8280283034, 7873111213

# योगीराज श्री कृष्ण

डॉ. कुंजदेव मनीषी

इस धरती पर महापुरुष तो अनेक हुए है, किन्तु लोकनीति समाज तथा अध्यात्म से समन्वय के सूत्र में गूंथकर समग्र राष्ट्र में क्रान्ति का शंखनाद करने वाले लोक नायक कृष्ण ही थे।

परवर्ती काल के लोगों ने चाहे कृष्ण के उदार चरित्र तथा बहु आयामी कृतित्व को समझने में कितनी ही भूलें क्यों न की हों, उनके समकालीन तथा अत्यन्त आत्मीयजनों ने उस युग पुरुष व्यक्तित्व का सही मूंल्यांकन किया था। उनसे आयु तथा अनुभव में बड़े युधिष्ठिर उनका सम्मान करते थे तथा उनकी सलाह को सर्वाधिक महत्व देते थे। पितामहभीष्म, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य तथा विदुर जैसे नीतिज्ञ सलाह के लोग भी उनको भरपुर आदर देते थे। महाभारत के प्रणेता कृष्ण द्वैपायन व्यास ने तो उन्हें धर्म का पर्याय बताते हुए यहाँ तक कह दिया था–

**'यतो कृष्ण स्ततो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः' अर्थात् :**– उनके जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसे उन्होंने अपनी प्रतिभा तथा श्रम के द्वारा प्रमाणित नहीं किया। एक ओर वे महान् राजनीतिज्ञ, क्रान्तिविधाता, धर्म पर आधारित नवीन साम्राज्य के स्रष्टा राष्ट्रनायक के रुप में दिखाई पड़ते हैं, तो दूसरी ओर धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा नीति के सुक्ष्म चिन्तक, विवेचक तथा प्रचारक के रुप में भी उनकी भूमिका कम महत्व की नहीं है। उनके समय में भारत वर्ष सुदूर उत्तर में गन्धार से लेकर दक्षिण तक क्षत्रियों के छोटे–छोटे स्वतंत्र, किन्तु निरंकुश राज्यों में विभक्त हो चुका था। उन्हें एक सूत्र में पिरोकर समग्र भारतखण्ड को एक सुदृढ़ राजनीतिक इकाई के रुप में पिरोने वाला कोई नहीं था। एक चक्रवर्ती प्रजापालक सम्राट के न होने से माण्डलिक राजा जन नितान्त स्वेच्छाचारी, प्रजा पीड़क तथा अन्यायी हो गए थे। मथुरा का कंस, मगध का जरासंध, चेदि देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर के कौरव सभी दुष्ट, विलासी, दुराचारी मदिरा में उन्मत्त हो रहे थे। श्रीकृष्ण ने अपनी नीतिमत्ता तथा सूझबूझ से इन सभी अनाचारियों का मूलोच्छेद किया तथा धर्मराज अजातशत्रु युधिष्ठर को आर्यावर्त्त के सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर इस देश में चक्रवर्ती धर्मराज स्थापित किया।

समकालीन सामाजिक दुरवस्था, विषमता तथा नष्ट हुए नैतिक मूल्यों के प्रति वे पूर्ण जागरुक थे। महाभारत के युग में सामाजिक पतन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे। गुण–कर्म और स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था जन्मना जातियों के रुप में बदल चुकी थी। ब्राह्मण वर्ग अपनी स्वभावगत शुचिता, लोकोपकार–भावना, त्याग, सहिष्णुता तथा सम्मान के प्रति तटस्थता–जैसे सद्गुणों को भुलाकर संग्रहशील, अहंकारी बन चुके थे। इन्हीं विषय तथा पीड़ाजनक परिस्थितियों को श्री कृष्ण ने निकट से देखा था। इन दु:खद स्थितियों से जनता को उबारने के लिए ही उनके सभी प्रयास थे। शोषित, पीड़ित तथा दलित वर्ग और नारी के अभ्युत्थान के लिए उन्होंने सर्वतोमुखी प्रयास किए।

श्री कृष्ण के इस आदर्श रुप को शताब्दियों से हमने भुला दिया था। धर्मवेत्ता भीष्म ने उन्हें अपने युग का वेद वेदांगों का उत्कृष्ट ज्ञाता, अतीव बलशाली तथा मनुष्य लोक में अतिविशिष्ट बताया था। कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न हैं।

गीता के उपदेश के कारण श्री कृष्ण जी तो सारे संसार में छाये हुये हैं। गीता का संदेश आज भी हमारे लिए उतनी ही महत्व है और पालनीय है।

आज हर कोई कहता है मैं तो कृष्ण का भक्त हूँ। कृष्ण भक्त बनने के लिए कृष्ण की बात तो मानों, माता-पिता का भक्त बनने के लिए माता-पिता की सुन्दर और कल्याणकारी शिक्षाएं तो माननी पड़ेगी। गुरुभक्त बनने के लिए उनके बताये हुए आदर्शों को जीवन में उतारना पड़ेगा। कृष्ण ने अपने जीवन में संयम रखा, क्या आप और हम अपने जीवन में रखते है। सार्थकता इसी में हैं कि हम बताये हुए मार्ग को अपनाकर उस पर चलें। यही हमारी वैदिक संस्कृति का साराशं है।

## आसपास बिखरी खुशियाँ बटोर लें।

जैसा की हम जानते हैं कष्ट, बाधाएं, असंतोष इच्छा-विघात आदि हमारे मन को तनावग्रस्त बना देते हैं। मन को तनाव से हटाने के लिए, नाखुशी को खुशी में और अनुत्साह को उत्साह में बदलना आवश्यक है।

आप-पास नजर दौड़ाएंगे तो पाएंगे कि खुशियाँ उत्पन्न करने वाले अनेक कारण हमारे आसपास ही मौजुद हैं।

काम करते-करते साथियों से हल्की-फुल्की हंसी-मजाक करते रहेंगे, तो काम का बोझ हल्का लगने लगेगा। किसी को की हुई छोटी सी मदद या आपका दिया हुआ सही मार्गदर्शन न केवल उसको बड़ा लाभ पहुंचाता है, बल्कि हमारे मन को भी संतोष से भर देता है। रोज १५ से २० मिनट व्यायाम करना या मधुर संगीत सुनना एक तरह से अपनी बैटरी रिचार्ज करने जैसा है।

ऐसे मित्र या संबंधी जिनसे लम्बे समय से बात या सम्पर्क नहीं हुआ, उनसे फोन करके १० मिनट बात करें, तो मन को सुकून मिलेगा। कभी अनाथाश्रम या गरीबों के पास जाकर थोड़ी सी मिठाई बांटिए तो आत्मा में तृप्ति का अनुभव होगा। बचपन में माता-पिता की उंगली पकड़कर जहाँ मेला देखने जाते थे, उन गलियों-रास्तों पर भी चक्कर लगाइए और बचपन की यादों में खो जाइए- मन प्रफुल्लित हो उठेगा।

खुशियों को कहीं दूर जाकर ढूंढने जाने की जरुरत नहीं है, वह तो चारों ओर बिखरी पड़ी है, बस बटोर लेने भर की देर है। और जिसका मन खुशियों से भर चुका है, वहाँ तनाव के लिए स्थान कहाँ?

अनेक बार हम औरों के साथ चर्चा करते समय यह कहते हैं कि मेरी तो ये-ये हॉबीज (पसंदीदा काम) हैं। हॉवी वह है, जिसमें हमारी रुचि है, जिसे करने से हमें खुशी मिलती है। तो क्या हम उन हॉबीज के लिए भी कभी समय निकालते हैं?

अपने आपसे ये प्रश्न करेंगे तो उत्तर मिलेगा कि नहीं। हम खाली बोलते बस हैं पर उनको करते नहीं। यदि ऐसे काम जो हमें अच्छे लगते हैं, वहीं करेंगे तो मन रिचार्ज नहीं होगा। वह रोजाना के कामों से जल्दी थक-हर कर तनावग्रस्त हो जाएगा।

खेल-कूद में भाग लें। खेलकूद, शारीरिक के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पाने में उपयोगी होता है। इससे शारीरिक और मानसिक चंचलता योग्य (सही) दिशा में चैनलाइज होती है। व्यायाम करने से शरीर में ऐसे हार्मोन्स बनते हैं, जो हमें विपरीत स्थितियों में टिके रहने और डटकर मुकाबला करने की योग्यता देते हैं। यह शोधकर्ताओं द्वारा सिद्ध की हुई बात है।

व्यायाम-खेलकूद से टीम वर्क, स्फूर्ति, उत्साह, अवलोकन क्षमता, चपलत (सक्रियता), एकाग्रता, निर्णय क्षमता, संकलन आदि गुण विकसित होते हैं। ऐसे सबल व्यक्तित्व वाला इंसान तनावग्रस्त हो ही नहीं सकता, या तनाव को अपने प हावी नहीं होने देता। हमें भी ऐसे ही प्रयास करना चाहिए।

**विद्यार्थी और तनाव से साभार**


## उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें:-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 01. सत्यार्थ प्रकाश | - 40.00 | 07. विष चिकित्सा | - 30. 00 |
| 02. खिलते फूल | - 8.00 | 08. कन्या और ब्रह्मचर्य | - 05.00 |
| 03. गीत कुञ्ज | - 10.00 | 09. ईश्वर कहां है ? | - 10.00 |
| 04. सच्चा सुखी कौन | - 10.00 | 10. सच्चा धर्म | - 05.00 |
| 05. विचित्र ब्रह्मचारी | - 05.00 | 11. दैनिक उपासना | - 10.00 |
| 06. वैदिकधर्म प्रश्नोत्तरी | - 15.00 | 12. योगासन एवं प्राणायाम | - 25.00 |

# गुरुकुल आश्रम आमसेना की स्वर्ण जयंती महोत्सव के लिए आर्य जगत में सर्वत्र उत्साह का वातावरण

देश के चारों तरफ हजारों लोगों के पहुंचने का सूचना आ रही है। योगर्षि पूज्य स्वामी रामदेव जी एवं उच्चकोटि के वैद्य आचार्य बालकृष्ण जी ने भी स्वर्ण जयंती महोत्सव में आशीर्वाद देने के लिए आने का आश्वासन देते हुए सर्वविध सहयोग देने का भी वचन दिया है।

प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी दिल्ली ने ५ लाख रु. देने के लिए घोषणा करते हुए ढाई लाख रु. का चेक भेज दिया हैं।

गुरुकुल के आजीवन सदस्य महाशय वेगराज जी के सुपुत्र गुरुकुल के विशेष सहयोगी श्री राजेन्द्र जी आर्य धनखड़ ने भोजन भण्डार के लिए अच्छी क्वालिटी का ५० क्विंटल चावल दान दिया है। इसी प्रकार देश की विभिन्न भागों से लगातार सहयोग के आश्वासन मिल रहे हैं। आर्य जगत के प्रायः सभी साधु महात्मा एवं विद्वान् भी अपना आशीर्वाद देने के लिए पधार रहे हैं।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ १ दिसम्बर से प्रारम्भ हो जायेगा। इस पवित्र अवसर पर पधारकर अपना सहयोग देकर जीवन सफल बनायें।

गुरुकुल के स्वर्ण जयंती हेतु पू.स्वामी रामदेव जी तथा धर्मपाल आर्य जी (अध्यक्ष, एम.डी.एच.) का स्वीकृति प्राप्त हुआ।

R.N.I. No. ORIHIN/2000/1876 P.R.No. Kalahandi/03/2016-2018

# गुरुकुल आश्रम द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक आसव

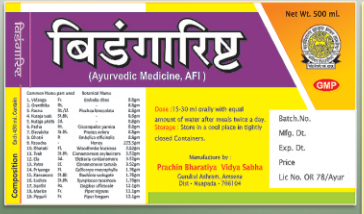

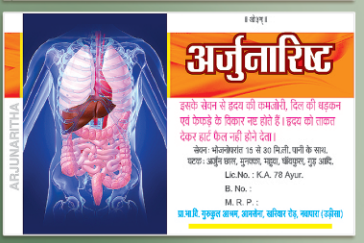

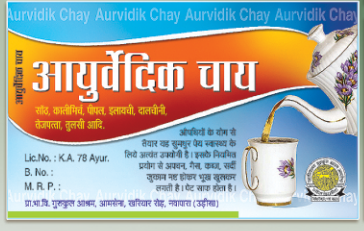

सेवा में,

.....

.....

.....

सदस्यता हेतु एक प्रतिः 10 रु. वार्षिक शुल्कः 100 रु. आजीवनः 1000 रु.

प्रधान सम्पादकः स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से शारदा आफसेट प्रिन्टर्स, ग्राम-डुण्डा, सेजबहार रोड, रायपुर से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया। प्रकाशकः गुरुकुल आश्रम, आमसेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओड़िशा)